

भारत मालदीव सम्बन्ध

(एक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामरिक एवं सुरक्षा आधारित अध्ययन)

महेन्द्र कुमार पुरोहित

व्याख्याता

राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज, जोधपुर

सार — हिंद महासागर में स्थित मालदीव के भारत के साथ सम्बन्ध ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा सामरिक निकटता पर आधारित है। 1965 में ब्रिटेन से स्वतन्त्रता बाद भारत ने मालदीव से राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किए। दोनों देशों ने द्विपक्षीय सहयोग के साथ समुद्री सुरक्षा, रक्षा, आर्थिक सहायता, आपदा प्रबंधन, मानव संसाधन विकास और क्षेत्रीय स्थिरता पर सम्बन्ध मजबूत किए। दोनों देशों के बीच 1988 में मालदीव में हुए तख्तापलट के प्रयास के दौरान भारत द्वारा चलाया गया “ऑपरेशन कैक्टस” द्विपक्षीय सम्बन्धों का महत्वपूर्ण मोड़ था। 2013 के बाद मालदीव की आन्तरिक राजनीतिक परिस्थितियों तथा चीन के बढ़ते आर्थिक-सामरिक प्रभाव ने दोनों देशों के सम्बन्धों को प्रभावित किया। 2018 भारत समर्थित मोहम्मद सालेह के राष्ट्रपति बनने के बाद द्विपक्षीय व क्षेत्रीय हितों को मजबूती मिली।

प्रमुख शब्द — भारत, मालदीव, हिंद महासागर, ऑपरेशन कैक्टस, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, चीन

हिन्दी महासागर भारत की विदेश एवं सुरक्षा नीति में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है मालदीव हिन्द महासागर में भारत के निकट एक द्वीपीय राष्ट्र है, समुद्री संचार लाइनों के आसपास उसका स्थान उसे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाता है, मालदीव भारत के पश्चिमी तट से लगभग 300 समुद्री मील तथा मिनिकाय से लगभग 70 समुद्री मील की दूरी पर अवस्थित है।⁽¹⁾ दोनों देशों के बीच प्राचीन काल से ही व्यापारिक, सांस्कृतिक और समुद्री सम्पर्क रहे हैं।

1968 में जनमत संग्रह द्वारा इब्राहिम नासिर पहले राष्ट्रपति बने। 10 वर्ष के शासनकाल में देश आर्थिक रूप से पिछड़ा रहा, 1978 में जनाक्रोश को देखते हुए नासिर सिंगापुर भाग गया इसके बाद 1978 में अब्दुल गयूम राष्ट्रपति बने उनके विरुद्ध 1980, 1983 और 1988 में तख्ता पलटने के प्रयास हुए। भारत ने 1988 में “ऑपरेशन कैक्टस” चलाकर तख्तापलट को नाकाम कर दिया। अब्दुल गयूम 1978 से 2008 तक राष्ट्रपति रहे। 2008 में नए संविधान के अन्तर्गत आम चुनाव हुए जिसमें

मालदीवीय डेमोक्रेटिक पार्टी के मोहम्मद नसीद राष्ट्रपति बने जिन्हें अपने सामाजिक सरोकारों व लोकतांत्रिक विचारों के कारण “मालदीव का मण्डेला” भी कहा जाता है। इनके कार्यकाल में इस्लामी कट्टरवाद की भावना बढ़ी तथा सरकार के विरुद्ध तख्ता पलट के कई प्रयास हुए, मोहम्मद नसीद ने फरवरी 2012 में त्याग पत्र दे दिया तथा उपराष्ट्रपति मोहम्मद वाहिद राष्ट्रपति बने, 2012 के चुनाव में अब्दुल्ला यामिन राष्ट्रपति बने जो कट्टर चीन समर्थक थे 2018 के राष्ट्रपति चुनाव में विपक्ष के संयुक्त उम्मीदवार इब्राहिम मोहम्मद सालेह राष्ट्रपति बने जिन्हें भारत समर्थक के रूप में देखा जा रहा है।

मालदीव का रणनीतिक महत्त्व — मालदीव की जनसंख्या लगभग पांच लाख व क्षेत्रफल 298 वर्ग किमी है लेकिन हिन्द महासागर में अवस्थित इस देश की भौगोलिक स्थिति महाशक्तियों को सामरिक व रणनीतिक रूप से आकर्षित करती है। मालदीव की स्वतन्त्रता के बाद भारत ने 1972 में माले में अपने राजनयिक मिशन की स्थापना की। मालदीव की ओर से सभी राष्ट्रपतियों ने भारत की यात्रा कर द्विपक्षीय व क्षेत्रीय सम्बन्धों को मजबूत बनाने का प्रयास किया।” भारत व मालदीव संयुक्त राष्ट्र संघ, सार्क, राष्ट्रमण्डल, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, आई ओ.आर.ए. जैसे बहुपक्षीय मंचों पर एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। इस क्षेत्र में अपने भू-राजनीतिक और भू-सामरिक महत्त्व के कारण मालदीव भारत के लिए एक महत्त्वपूर्ण पड़ोसी है। दोनों देशों ने करीबी रणनीतिक, सैन्य, आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध विकसित किए हैं, अपने छोटे आकार के बावजूद मालदीव का भारत के लिए इसकी अवस्थिति को देखते हुए रणनीतिक महत्त्व है क्योंकि यह समुद्र की उन गलियों के करीब स्थित है जिसके माध्यम से भारत के अधिकांश शिपिंग कार्गो गुजरते हैं। मालदीव का सबसे उत्तर छोर भारत के लक्षद्वीप समूह के दक्षिण बिन्दु से केवल 700 किमी दूर है, जहाँ भारत का नौसैनिक अड्डा है।⁽²⁾

इस क्षेत्र में भारत-मालदीव श्रीलंका ने संयुक्त रूप से हिन्द महासागर में सुरक्षा हेतु एक तंत्र स्थापित किया है। मालदीव चीन द्वारा अपनाई जा रही “स्ट्रिंग ऑफ पलर्स” की नीति का हिस्सा है यह नीति चीन द्वारा हिन्द महासागर में वर्चस्व स्थापित करने तथा भारत को रणनीतिक रूप से घेरने के लिए अपनायी जा रही है। चीन समय-समय पर मालदीव को विविध सहायता प्रदान कर भारत से दूर करने का प्रयास करता रहा है, साथ ही भारत का यह प्रयास रहा है कि मालदीव चीनी पहुंच से दूर रहे।⁽³⁾

राजनीतिक सम्बन्धों का विकास —

भारत के लिए मालदीव का महत्त्व तीन स्तरों पर देखा जा सकता है:—

- (i) हिन्द महासागर की समुद्री सुरक्षा।
- (ii) भारत के पश्चिमी समुद्री क्षेत्र की सुरक्षा।
- (iii) दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता।

1965 के बाद भारत व मालदीव के राजनीतिक सम्बन्ध सामान्यतः मित्रता व सहयोगात्मक रहे हैं। भारत ने मालदीव की संप्रभुता और राजनीतिक स्थिरता को सदैव महत्त्व दिया है। भारत ने मालदीव के विकास में स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन, आधारभूत संरचना और क्षमता निर्माण जैसे क्षेत्रों में सहायता उपलब्ध कराई है। भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार मालदीव को भारत की आर्थिक और तकनीकी सहायता इन क्षेत्रों में दी जाती रही है।⁽⁴⁾

भारत मालदीव सहयोग के विकास आयाम –

नवम्बर 1988 मालदीव में सरकार को अपदस्थ करने का प्रयास हुआ, तत्कालीन राष्ट्रपति मौमून अब्दुल गयूम ने भारत से सहायता मांगी, भारत ने तत्काल सैन्य कार्यवाही “ऑपरेशन कैक्टस” चलाकर तख्ता पलट प्रयास को विफल कर दिया। इस घटना ने दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग को नई दिशा दी। भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार 1988 के तख्ता पलट प्रयास के दौरान भारत त्वरित सहायता से दोनों देशों के बीच दीर्घकालीन विश्वास एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के विकास में योगदान मिला। भारतीय सैनिकों को आवश्यकता समाप्त होने के बाद वापस बुला लिया गया।⁽⁵⁾

1986 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा मालदीव में “इंदिरा गांधी मेमोरियल हॉस्पिटल”, इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी संकाय और आतिथ्य एवं पर्यटन अध्ययन संकाय सहित कई प्रमुख संस्थानों की स्थापना की गई। दिसम्बर 2004 सुनामी की त्रासदी के बाद तत्काल सहायता तथा पेयजल कंटेनर उपलब्ध कराये गए तथा भारत ने 10 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई। 2008 तथा 2011 में भारत ने मालदीव को 100–100 मिलीयन डॉलर की अतिरिक्त ऋण सुविधा उपलब्ध कराई गई। भारत ने मालदीव को स्टैण्डबाय क्रेडिट सुविधा भी प्रदान की, जिसमें दीर्घकालीन ऋण और व्यापार के लिए क्रेडिट को संशोधित किया गया। भारत सरकार को मालदीव को दी जाने वाली 40 मिलीयन यू.एस. डॉलर की नई लाईन ऑफ क्रेडिट के तहत ओवरसीज, इन्फ्रास्ट्रक्चर एलायन्स ऑफ इंडिया को मालदीव में 485 हाउसिंग यूनिट बनाने का ठेका दिया गया। वर्ष 2009 मालदीव में उत्पन्न भुगतान संकट के समय मालदीव द्वारा जारी बॉन्ड्स को स्टेट बैंक द्वारा ग्रहण किया गया। भारत मालदीव का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है तथा दोनों देशों का व्यापार वर्ष 1981 में सम्पन्न व्यापार समझौते द्वारा संचालित होता है। भारत मालदीव को कृषि, पौल्ट्री उत्पाद, चीनी, फल, सब्जियाँ,

दवाइयाँ, इंजीनियरिंग उत्पाद, मसाले, चावल का निर्यात करता है तथा मालदीव भारत को स्कैप धातुएं निर्यात करता है। भारत के स्टेट बैंक ने मालदीव में पर्यटन एवं नियति क्षेत्र में व्यापक निवेश किया है। वर्ष 2009 में भारत की सुजलान कम्पनी ने “पवन ऊर्जा” उत्पादन शुरू किया। 2010 में जी.एम. आर. इन्फ्रास्ट्रक्चर को मालदीव में हवाई अड्डे के पुनर्निर्माण तथा रखरखाव हेतु 25 वर्षों का ठेका दिया गया।

10–12 नवम्बर 2011 प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की मालदीव यात्रा –

मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद नसीद ने भारत के साथ सम्बन्धों को बहुत महत्त्व दिया। प्रधानमंत्री ने वहाँ की संसद “पीपुल्स मजलिस” को सम्बोधित किया। दोनों देशों के नेताओं ने जातीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक सम्बन्धों पर चर्चा की तथा लोकतंत्र के विकास और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की प्रतिबद्धता में विश्वास—जताया दोनों देशों के विविध स्तर के कई समझौते हुए। मालदीव में प्रवासी भारतीयों का बड़ा समुदाय (करीब 22000) है, भारतीय प्रवासी श्रमिकों के साथ डॉक्टर, शिक्षक, लेखाकार, प्रबंधक, इंजीनियर, नर्स और तकनीशियन के रूप में कार्यरत है।

प्रधानमंत्री मोदी और अब्दुल्ला यामीन –

प्रधानमंत्री मोदी ने मालदीव को हिन्द महासागर में एक महत्त्वपूर्ण साझेदार के रूप में अभिव्यक्त किया और कहा कि भारत व मालदीव के सम्बन्ध एवं बहुत मजबूत नींव पर बने हैं, जिसकी रूपरेखा साझा रणनीतिक सुरक्षा, आर्थिक और विकासात्मक लक्ष्य द्वारा परिभाषित की गई है। 2013 में सत्ता संभालने के बाद से राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन तीन बार भारत दौरे पर आए, अप्रैल 2016 में अपनी अंतिम यात्रा के दौरान यामीन ने “भारत प्रथम” की नीति की बात कही और यात्रा के समय रक्षा से कराधान तक छः समझौते पर हस्ताक्षर हुए।⁽⁶⁾

रक्षा एवं समुद्री सुरक्षा सहयोग –

1988 के बाद रक्षा प्रशिक्षण व क्षमता निर्माण में सहयोग बढ़ा है।

- जून 2018 में तीसरी संयुक्त स्टॉफ वार्ता।
- भारतीय नौ सेना और मालदीव नेशनल डिफेंस फोर्स की बीच संयुक्त EEZ Surveillance हुआ।
- अप्रैल–मई 2018 में Exercise Ekaika 2018 आयोजित हुआ।
- मई 2018 INS सुमेधा ने मालदीव के MNDF Personal के साथ EEZ Surveillance किया।
- मालदीव के Coast Guard जहाज Hurave का भारत में refit किया गया।
- नवम्बर 2018 Dosti-14 अभ्यास में सहयोग हुआ।

भारत मालदीव सम्बन्धों में चीनी कारक –

फरवरी 2018 में राष्ट्रपति यामीन ने आपातकाल की घोषणा कर सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं को निलम्बित कर दिया। यामीन सरकार की चीन के साथ बढ़ते सम्बन्धों से भारत मालदीव सम्बन्धों में खटास आने लगी थी। चीन हिन्द महासागर में भारत को घेरने की नीति के रूप में मालदीव को महत्वपूर्ण साधन मानता है।

चीन ने यामीन सरकार के कार्यकाल में मालदीव की बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं में बड़े निवेश किए। चीन द्वारा मालदीव में द्वीपों का विस्तार कर किया गया कृत्रिम द्वीप बनाकर चीन भारत को सामरिक चुनौती पेश कर रहा है। वर्ष 2016 में फेघू फिनोल्हू समेत 16 द्वीपों को चीन को 50 वर्ष की लीज पर दे दिया गया। यह द्वीप चीन की बेल्ट एण्ड रोड इनीसिएटिव का हिस्सा है, दिसम्बर 2017 में यामीन ने चीन के साथ एक मुक्त व्यापार समझौता FTA सम्पन्न किया चीन से ऋण जाल में फंस रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी व इब्राहिम सालेह –

विपक्ष के संयुक्त उम्मीदवार इब्राहिम सालेह के निर्वाचित होने पर भारत के विदेश मंत्रालय ने बधाई देते हुए कहा कि “यह चुनाव न केवल मालदीव में लोकतांत्रिक शक्तियों की विजय का प्रतीक है बल्कि यह लोकतंत्र व कानून के शासन के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। दोनों देशों के बीच बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं व निजी निवेश प्रक्रिया को भारत आगे बढ़ाना चाहेगा।

भारत व मालदीव सम्बन्धों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि सम्बन्ध केवल पारम्परिक कूटनीतिक सम्पर्कों तक सीमित नहीं रहे, इनका विस्तार सुरक्षा, विकास आर्थिक सहयोग, समुद्री सहयोग तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं तक हुआ है, 2018 में हुए चार प्रमुख समझौतों ने राजनीतिक सम्बन्धों के साथ-साथ वीजा, संस्कृति, कृषि व्यवसाय और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने का आधार बनाया। भारत मालदीव सम्बन्धों को ऐतिहासिक निकटता, भौगोलिक परस्पर निर्भरता, समुद्री सुरक्षा, विकास सहयोग और क्षेत्रीय स्थिरता पर आधारित बहुआयामी सम्बन्ध के रूप में देखा जा सकता है।

सन्दर्भ :-

1. भारतीय विदेश मंत्रालय, भारत-मालदीव द्विपक्षीय सम्बन्ध।

2. डॉ. सलीम अहमद, डॉ. श्रीष पाठक “मोदी सरकार के युग में भारत मालदीव सम्बन्ध, वर्ल्ड फोकस अंक फरवरी 2018 पृष्ठ सं. 93
3. राजेश मिश्रा, “भू-मण्डलीकरण के दौर में भारत की विदेश नीति, सरस्वती आई.ए.एस., नई दिल्ली पृष्ठ 105—106
4. भारतीय विदेश मंत्रालय, भारत और पड़ोसी, मालदीव
5. भारतीय विदेश मंत्रालय – भारत मालदीव द्विपक्षीय संबंध
6. डॉ. सलीम अहमद वही पृष्ठ 93